ज्ञान' शब्द 'ज्ञ' धातु से बना है जिसका अर्थ 'जानना' ,बोध,अनुभव एवं 'प्रकाश' से माना गया है। आसान शब्दो में कहा जाये तो किसी वस्तु के स्वरूप का,जैसा वह है,वैसा ही अनुभव या बोध होना ज्ञान है। ... हमे निरन्तर रूप से अनुभव होते रहते है,क्योंकि हम चेतन है।

निरपेक्ष सत्य की स्वानुभूति ही ज्ञान है। यह प्रिय-अप्रिय, सुख-दु:ख इत्यादि भावों से निरपेक्ष होता है। इसका विभाजन विषयों के आधार पर होता है। विषय पाँच होते हैं - रूप, रस, गंध, शब्द और स्पर्श।

ज्ञान लोगों के भौतिक तथा बौद्धिक सामाजिक क्रियाकलाप की उपज ; संकेतों के रूप में जगत के वस्तुनिष्ठ गुणों और संबंधों, प्राकृतिक और मानवीय तत्त्वों के बारे में विचारों की अभिव्यक्ति है। ज्ञान दैनंदिन तथा वैज्ञानिक हो सकता है। वैज्ञानिक ज्ञान आनुभविक और सैद्धांतिक वर्गों में विभक्त होता है। इसके अलावा समाज में ज्ञान की मिथकीय, कलात्मक, धार्मिक तथा अन्य कई अनुभूतियाँ होती हैं। सिद्धांततः सामाजिक-ऐतिहासिक अवस्थाओं पर मनुष्य के क्रियाकलाप की निर्भरता को प्रकट किये बिना ज्ञान के सार को नहीं समझा जा सकता है। ज्ञान में मनुष्य की सामाजिक शक्ति संचित होती है, निश्चित रूप धारण करती है तथा विषयीकृत होती है। यह तथ्य मनुष्य के बौद्धिक कार्यकलाप की प्रमुखता और आत्मनिर्भर स्वरूप के बारे में आत्मगत-प्रत्ययवादी सिद्धांतों का आधार है।[1]

वेबस्टर के अनुसार-"ज्ञान वह है जो ज्ञात है और जो ज्ञात होने के बाद संचित रहता है या वह जानकारी है जो वास्तविक अनुभव द्वारा प्राप्त होती है।"

ज्ञान की अवधारणा

जब हम शिक्षण देते है तो हम ज्ञान प्रदान करते है इसलिए हमेंजानना आवश्यक होता है कि हम ज्ञान के किस स्वरूप का उपयोग कर रहे है, कैसे हमविद्यार्थी को यथार्थ ज्ञान से परिचय प्रदान करें। क्या हम जो ज्ञान उसे दे रहे है वह पूर्णयथार्थ ज्ञान है सत्यता से पूर्ण है यह सब हम जानते है एवं समझते है क्या इन सिद्धान्तों कीजानकारी शिक्षक को होना अति आवश्यक है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान प्रदान करना है,तथा जो भी तथ्य हम पढ़ाते है तो वह सत्य पर आधारित है सत्य और ज्ञान दोनो एक दूसरेसे जुड़े है दोनों में कोई अंतर नहीं है। शाश्वत सत्य ही ज्ञान है। समाज के लिए ज्ञान हीशिक्षा है। सभी प्राचीन ऋषि मुनियों तथा मुस्लिम संतों का े प्रथम ज्ञान हुआ तब उन्होंने उसकाप्रचार: प्रसार किया इस प्रकार से ज्ञान की उपयोगिता शिक्षा ही सिद्ध करती है। ज्ञान कीदूसरी अवधारणा है कि ज्ञान सूक्ष्म है या स्थूल है यह बात हम अध्यापक के द्वारा विद्यार्थियोंको अध्ययन कराते समय शिक्षक एवं विद्याथ्र्ाी के मन में ज्ञान सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है।दूसरी ओर पुस्तकों में जो भाषा लिखी है वह ज्ञान स्थूल है। एक उदाहरण के द्वारा हम समझसकते है जैसे पानी में नमक डालने पर जो नमक के छोटे कण है वे घुल जाते है और जोबड़े डैले होते है वे दिखाई देते रहते है ठीक उसी प्रकार से यह ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान होता हैज्ञान के दो पक्ष है – प्रत्यक्ष ज्ञान और परोक्ष ज्ञान।

प्रत्यक्ष ज्ञान मनुष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव के द्वारा प्राप्त करता है। परोक्ष ज्ञानहमे दूसरों से कथनो या पुस्तकों द्वारा प्राप्त होता है। शिक्षा में दोनों प्रकार के ज्ञान का महत्वहै। ज्ञान केवल अनुभूति भाग है यह हम एक गेंद के द्वारा समझ सकते है। यदि हम गेंद कोदेखते है तो हमें उसका रंग, रूप, आकार दिखाई देता है और यदि हम इसी गेंद को ब्रह्माण्डके रूप में देखते है तो वह हमें इस पृथ्वी का आकार तथा सतह एवं उसके पूर्ण रूप कोदर्शाती है। इस प्रकार से हम ज्ञान के कई स्तरों को पाते है और विभिन्न प्रकार से मन मैंकई प्रकार से सक्रिय होता है उसे हमें अनुभव तथा तर्क चिन्तन के माध्यम से प्राप्त करते है।